॥तैत्तिरीय ब्राह्मणम्॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः॥

ब्रह्म॑णे ब्राह्म॒णमाल॑भते। क्ष॒त्राय॑ राज॒न्य᳚म्। म॒रुद्भ्यो॒ वैश्य᳚म्। तप॑से शू॒द्रम्। तम॑से॒ तस्क॑रम्। नार॑काय वीर॒हण᳚म्। पा॒प्मने᳚ क्ली॒बम्। आ॒क्र॒याया॑यो॒गूम्। कामा॑य पुँ॑श्च॒लूम्। अति॑क्रुष्टाय मा॒गधम्॥१॥

गी॒ताय॑ सू॒तम्। नृ॒त्ताय॑ शैलू॒षम्। धर्मा॑य सभाच॒रम्। न॒र्माय॑ रे॒भम्। नरि॑ष्ठायै भीम॒लम्। हसा॑य॒ कारि᳚म्। आ॒न॒न्दाय॑ स्त्रीष॒खम्। प्रमुदे॑ कुमारीपु॒त्रम्। मे॒धायै॑ रथका॒रम्। धैर्या॑य॒ तक्षा॑णम्॥२॥

श्रमा॑य कौला॒लम्। मा॒यायै॑ कार्मा॒रम्। रू॒पाय॑ मणिका॒रम्। शुभे॑ व॒पम्। श॒र॒व्या॑या इषुका॒रम्। हे॒त्यै ध॑न्वका॒रम्। कर्म॑णे ज्याका॒रम्। दि॒ष्टाय॑ रज्जुस॒र्गम्। मृ॒त्य॑वे मृग॒युम्। अन्त॑काय

श्वनितम्॥ ३॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निरृत्यै परिवित्तम्। आर्त्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्। बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥ ४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम्। प्रयुद्भ्य उन्मत्तम्। गन्धर्वाप्सराभ्यो व्रात्यम्। सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवेभ्यः कितवम्। इर्यताया अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानेभ्यः कण्टककारम्॥ ५॥

उत्सादेभ्यः कुब्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वार्भ्यः स्रामम्। स्वप्नायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्निनम्। उपशिक्षाया अभिप्रश्निनम्। मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥ ६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्त्यै क्षत्तारम्।

औपंद्रष्टाय सङ्ग्रही॒तारम्ँ। बलांयानुच॒रम्। भूम्ने॒ पंरिष्क॒न्दम्। प्रि॒यायं प्रियवा॒दिनम्ँ। अरिंष्ट्या अश्वसा॒दम्। मेधांय वासः पल्पू॒लीम्। प्र॒का॒मायं रजयि॒त्रीम्॥७॥

भायै दार्वाहा॒रम्। प्र॒भायां आग्ने॒न्धम्। नाकंस्य पृष्ठायांभिषे॒क्तारम्ँ। ब्र॒ध्नस्यं वि॒ष्टपांय पात्रनिर्णे॒गम्। दे॒व॒लो॒कायं पेशि॒तारम्ँ। म॒नु॒ष्य॒लो॒कायं प्रकरि॒तारम्ँ। सर्वेँभ्यो लो॒केभ्यं उपसे॒क्तारम्ँ। अवंर्त्यै व॒धायोंपमन्थि॒तारम्ँ। सु॒व॒र्गायं लो॒कायं भाग॒दुघम्ँ। वर्षिंष्ठाय॒ नाकांय परिवे॒ष्टारम्ँ॥८॥

अर्मेँभ्यो हस्ति॒पम्। ज॒वायांश्व॒पम्। पुष्ट्यै गोपा॒लम्। तेजंसेऽजपा॒लम्। वी॒र्यायाविपा॒लम्। इरांयै की॒नाशम्ँ। की॒लालांय सुराका॒रम्। भ॒द्रायं गृह॒पम्। श्रेयंसे वित्त॒धम्। अध्यंक्षायानुक्ष॒त्तारम्ँ॥९॥

म॒न्यवेंऽयस्ता॒पम्। क्रोधांय निस॒रम्। शोकांयाभिस॒रम्। उ॒त्कू॒ल॒वि॒कू॒लाभ्यांँत्रि॒स्थिनम्ँ। योगांय यो॒क्तारम्ँ। क्षेमांय

विमो॒क्तार᳚म्। वपु॑षे मानस्कृ॒तम्। शीला॑याञ्जनीका॒रम्। निर्ऋ॑त्यै कोशका॒रीम्। य॒माया॒सूम्॥१०॥

य॒म्यै॑ यम॒सूम्। अथ॑र्व॒भ्योऽव॑तोकाम्। सं॒व॒त्स॒राय॑ पर्या॒रिणी᳚म्। प॒रि॒व॒त्स॒राया॑विजाताम्। इ॒दा॒व॒त्स॒राया॑प॒स्कद्व॑रीम्। इ॒द्व॒त्स॒राया॒तीत्व॑रीम्। व॒त्स॒राय॒ विज॑र्जराम्। स॒र्व॒न्त्स॒राय॒ पलि॑क्नीम्। वना॑य व॒नपम्। अ॒न्यतो॑रण्याय दाव॒पम्॥११॥

सरो᳚भ्यो धैव॒रम्। वेश॑न्ताभ्यो॒ दाश᳚म्। उ॒प॒स्थाव॑रीभ्यो॒ बैन्द᳚म्। न॒ड्व॒लाभ्य॑ः शौष्क॒लम्। पा॒र्या॑य कैव॒र्तम्। अ॒वा॒र्या॑य मार्गा॒रम्। ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्दम्। विष॑मेभ्यो मैना॒लम्। स्वने᳚भ्यः॒ पर्ण॑कम्। गुहा᳚भ्यः॒ किरा॑तम्। सानु॑भ्यो॒ जम्भ॑कम्। पर्व॑तेभ्यः॒ किम्पू॑रुषम्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रुत्का॑या ऋतु॒लम्। घोषा॑य भ॒षम्। अन्ता॑य बहुवा॒दिन᳚म्। अ॒न॒न्ताय॒ मूक᳚म्। महसे॑ वीणावा॒दम्। क्रोशा॑य तूणव॒ध्मम्। आ॒क्र॒न्दाय॑ दुन्दुभ्याघा॒तम्। अ॒व॒र॒स्प॒राय॑ शङ्ख॒ध्मम्। ऋ॒भुभ्यो॑जिनसन्धा॒यम्। सा॒ध्येभ्य॑श्चर्म॒म्णम्॥१३॥

बी॒भ॒त्सायै॑ पौल्क॒सम्। भूत्यै॑ जागर॒णम्। अभू᳚त्यै स्वप॒नम्। तु॒लायै॑ वाणि॒जम्। वर्णा॑य हिरण्यका॒रम्। विश्वे᳚भ्यो दे॒वेभ्यः॑ सिध्म॒लम्। प॒श्चा॒द्दो॒षाय॑ ग्ला॒वम्। ऋत्यै॑ जनवा॒दिन᳚म्। व्यृ॑द्ध्या अपग॒ल्भम्। स॒ꣳ॒श॒राय॑ प्र॒च्छिद᳚म्॥१४॥

हसा॑य पुꣳश्च॒लूमा ल॑भते। वी॒णा॒वा॒दङ्गण॑कङ्गी॒ताय॑। याद॑से शाबु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भद्रव॒तीम्। तू॒ण॒व॒ध्मङ्ग्रा॑म॒ण्य᳚ं पाणिसङ्घा॒तन्नृ॒त्ताय॑। मोदा॑यानु॒क्रोश॑कम्। आ॒न॒न्दाय॑ तल॒वम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कित॒वम्। कृ॒ताय॑ सभा॒विन᳚म्। त्रेता॑या आदिनवद॒र्॒शम्। द्वा॒प॒राय॑ बहि॒ः सद᳚म्। कल॑ये सभास्था॒णुम्। दु॒ष्कृ॒ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्रह्मचा॒रिण᳚म्। पि॒शा॒चेभ्यः॑ सैल॒गम्। पि॒पा॒सायै॑ गोव्य॒च्छम्। निर्ऋ॑त्यै गोघा॒तम्। क्षुधे गो॑विक॒र्तम्। क्षुत्तृ॒ष्णाभ्या॒न्तम्। यो गां वि॒कृन्त॑न्तं मा॒ꣳ॒सं भिक्ष॑माण उप॒तिष्ठ॑ते॥१६॥

भूम्यै॑ पीठस॒र्पिण॒मा ल॑भते। अ॒ग्नयेऽꣳस॒लम्। वा॒यवे॑

चाण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षाय वꣳशन॒र्तिन᳚म्। दि॒वे ख॑ल॒तिम्। सूर्या॑य हर्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मिर्मि॒रम्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒लास᳚म्। अह्ने॑ शु॒क्लं पि॑ङ्ग॒लम्। रात्रि॑यै कृ॒ष्णं पि॑ङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पुरु॑ष॒मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नव्या॒᳚नमु॑दा॒नꣳ स॑मा॒नन्तान् वा॒यवे᳚। सूर्या॑य॒ चक्षु॒रा ल॑भते। मन॑श्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रोत्र᳚म्। प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथै॒तान॒रूपे॑भ्य॒ आल॑भते। अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्। अति॑कृश॒मत्य॑ꣳसलम्। अति॑शुक्ल॒मति॑कृष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण॒मति॑ अति॑किरि॒ट॒मति॑दन्तुरम्। अति॑मिर्मि॒र॒मति॑मेमिषम्। आ॒शायै᳚ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै᳚ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्म॑णे गी॒ताय॒ श्रमा॑य स॒न्धये॑ न॒दीभ्य॑ उत्सा॒देभ्य॒ ऋत्यै॒ भाया॒ अर्मे᳚भ्यो म॒न्यवे॑ य॒म्यै दश॑दश॒ सरो᳚भ्यो॒ द्वाद॑श प्रति॒श्रुत्का॑यै बीभ॒त्सायै॒ दश॑दश॒ हसा॑य स॒प्ताक्ष॑रा॒जाय॒ त्रयो॑दश॒ भूम्यै॒ दश॑ वा॒चे षड॑थ॒ नवैका॒न्नवि॑ꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्म॑णे य॒म्यै नव॑दश॥१९॥

ब्रह्म॑णे कुमा॒रीम्॥

हरिः ओम्॥
॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.
GitHub: http://stotrasamhita.github.io | http://github.com/stotrasamhita
Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/